“Sushela Thaakboure ke Saahity me Dalit Chetana yevam Nari Samvedana ke Swar”-

- ISBN 978-93-5627-066-4- March 2022.

# दलित चेतना के स्वर

**डॉ० घनश्याम भारती**
**डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० राकेश सिंह रावत**



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली


**दलित चेतना के स्वर**

**सम्पादक**

**डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० राकेश सिंह रावत**


**पीयर रिव्यू टीम**

डॉ० दीपक पाण्डेय, सहायक निदेशक, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली
आचार्य पं० पृथ्वीनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-मीडिया अध्ययन-विशेषज्ञ, प्रयागराज
डॉ० डी० आर० राहुल, प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया, मध्यप्रदेश
डॉ० शिव प्रसाद शुक्ल, प्रोफेसर हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

**वैधानिक चेतावनी**

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

© सर्वाधिकार सुरक्षित



प्रथम संस्करण : २०२२
**ISBN 978-93-5627-066-4**
**प्रकाशक**
**जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स**
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : ६६५.०० रूपये
आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

**Dalit Chetna ke Swar Edited by**
**Dr. Ghanshyam Bharti, Dr. Okendra, Dr. Rakesh Singh Rawat**

१६. महिला सशक्तिकरण में डॉ० अम्बेडकर की भूमिका १७२
श्रीमती रेखा गुप्ता, डॉ० ज्योति मैवाल
१७. हिन्दी साहित्य में आख्यानमूलक प्रबन्धकाव्यों में दलित चेतना के स्वर १७६
प्रा० डॉ० गंगा एकनाथ भोळके
१८. संत शिरोमणि, कुलभूषण रविदास जी महाराज समता, समानता और मानवता के पैगंबर १८२
सोनू रजक
१९. सुशीला टाकभौरे के साहित्य में दलित चेतना एवं नारी संवेदना के स्वर १८५
ए० स्वाती
२०. हिन्दी लोक साहित्य : हलचल हरियाणवी के काव्य में व्यंग्य की हलचल १९०
डॉ० हरि राम
२१. दलितों की समस्याएँ : 'धरती धन न अपना' उपन्यास के संदर्भ में १९९
सौ० शितल सचिन खैरमोडे
२२. दलित चेतना : सावित्रीबाई फुले एक समाज सुधारक २०७
सुनीता प्रयाकर राव
२३. दलित साहित्य में दलित चेतना के स्वर २१३
प्रसादराव जामि
२४. 'गूंगा नहीं था मैं' काव्य-संग्रह में दलित चेतना २१७
सी०हेच०सुनील कुमार, प्रो०डॉ०पी०हरिराम प्रसाद
२५. डॉ० तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' में दलित-चेतना २२४
कविता कोठारी
२६. शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित २३३
देवराम
२७. सामाजिक समरसता के अमर नायक संत 'रविदास' २३९
अजय सिंह रावत
२८. वीरेन्द्र जैन के उपन्यासों में जाति-भेद २४६
शेक० शाहीना बेगम
२९. प्रेमचंद की कहानियों में दलित-चेतना के स्वर २५४
पूजा शर्मा

१६

# सुशीला टाकभौरे के साहित्य में दलित चेतना एवं नारी संवेदना के स्वर

ए॰ स्वाती
हिन्दी प्राध्यापक
ए॰ एस॰ डी॰ गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज,
काकिनाडा, पूर्व गोदावरि जिला, आंध्र प्रदेश
ई–मेल : swathigorgeous007@gmail.com
मोबाइल : 8331959528

सारांश :

सुशीला टाकभौरे हिन्दी दलित साहित्य की अग्रिणी महिला साहित्यकारों में से एक है। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे, कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, निबंध, वैचारिक लेखों के माध्यम से स्त्री और दलित चेतना का स्वर उभारा।

सुशीला टाकभौरे जी का जितना अनुराग अपने दलित सामाजिक सरोकारों को लेकर हैं, उतना ही निष्ठा नारी विमर्श के प्रति भी रही है। इसका आभास इसी बात से होता है कि उन्होंने इसके लिए अलग से दो निबंधकीय पुस्तकें लिखी और प्रकाशित की।

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास में नारी।
२. भारतीय नारी : समाज और साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भों में।

इसी तरह इनकी 'नंगा सत्य' (२००७), 'जीवन के रंग', 'रंग और व्यंग्य' जैसे रचनाओं के माध्यम से सामाजिक विद्रूपताओं, दलितों, के शोषण व अत्याचार समाज में फैला पाखंड का जमकर विरोध हुआ है।

प्रस्तावना :

सुशीला टाकभौरे ने अपने लेखन में स्त्री पक्ष और वर्षों से चली आ रही गलत रूढ़ी परम्पराओं के खिलाफ कलम चलाई तथा जीवन के बदलते संदर्भों को बहुआयामों से प्रस्तुत किया। इनकी रचनाओं के नारी पात्र बिगलित जड़ संस्कारों का तिरस्कार कर भूतकालीन पारंपरिक गलत रूढ़ियों के विरोध कर नई स्थितियों और मूल्य स्थापन का बोध देते हैं।

कहा जाता है कि सुशीला जी अपने लेखन में दलितों कि समस्याओं को वाणी देने का कार्य कर रही हैं परंतु इन्होंने नारी को दलित से भी दलित मानते हुए उनकी समस्याओं को स्पष्ट किया।

विषय विवेचन (आलेख का मुख्य भाग) :

स्त्री मुक्ति, स्त्री चेतना और शिक्षित स्त्री, ये सब में से सशक्तिकरण क्या है? निर्बल का सबल बनाने का प्रयास सशक्तिकरण है या शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना सशक्तिकरण है? महिला सशक्तिकरण का अर्थ है, महिला को आत्मसम्मान, आत्मविश्वास प्रदान करना, अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का स्वतंत्र मिलना। यदि कोई महिला अपने अधिकारों के बारे में सजग है, यदि उसका आत्म सम्मान बड़ा हुआ तो वह सशक्त है, समर्थ भी।

सुशीला टाकभौरे का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले की एक छोटे से गाँव बानापुरा में हुआ है। उनकी माताजी श्रीमति पन्ना घंवारी और पिताजी का नाम रामप्रसाद घाँवारी है। सुशीला जी को चार भाई और तीन बहनें हैं। सुशीला जी वाल्मीकी जाती की है। वर्णवादी, जातिवादी, विषमतावादी, सामाजिक रचना के अनुसार उन्हें अछूत माना जाता था। उस समय दलित, पिछड़ी जातियों के घर सवर्ण समाज कि बस्तियों से दूर गाँव के बाहर रहते थे। सुशीला जी के घर भी गाँव से अलग दूर था। १९६०–७० के बीच दलित समाज में लड़कियों का विवाह १५–१६ के उम्र में ही किया जाता था। जाति समाज के लोग

उनका विवाह कम उम्र में कर देने कहते थे। रिश्तेदारों और जाति संप्रदाय से रिवाज को देखते हुए उनकी पढ़ाई बेच में छोड़ देने को कहा। लेकिन आदर्शवादी सुशीला जी पिताजी का विरोध किया, पिताजी के सामने पढ़ाई आगे बढ़ाने की जिद की और पिताजी के सामने भूखहडताल भी। पिताजी उनकी बात मानी और पढ़ाई आगे बढ़ाने मजबूरी करनी पड़ी। इस प्रकार अपना संघर्षमय जीवन भोग करना पड़ा और इसी प्रकार का संघर्ष उनके अपने रचनों में भी हमें मिलती है।

सुशीला टाकभौरे की रचनाओं में दलित एवं नारी मुक्ति की स्वर देखने मिलते हैं। उन्होंने अनेक अवरोधों, बाधाओं, चुनौतियों को पार करने के बावजूद दलित साहित्य पर अपना लेखन जारी रखा। साहित्य की विभिन्न विधाएँ जैसे कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, निबंध, वैचारिक लेखों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त किया है। स्वातिबूंद और खारे मोती, यह तुम भो जानो, हमारे हिस्से का सूरज, तुमने कब उसे पहचाना (काव्य–संग्रह), परिवर्तन जारी है (वैचारिक लेख), हाशिए का विमर्श (निबंध), वह लड़की तुम्हें बदलना ही होगा, नीला आकाश (उपन्यास), शिंकजे का दर्द (आत्मकथा), हिन्दी साहित्य के इतिहास में नारी का नजर (लेख), दलित साहित्य : एक आलोचना दृष्टि (आलोचना पुस्तक), मेरे साक्षात्कार, कैदी नं ३०७ इत्यादि इनकी प्रमुख व प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

साहित्य में उनकी पहचान कवयित्री व कहानीकार के रूप में होती है। सुशीला जी जब आठवीं कक्षा पढ़ती थी तभी अपने छोटे भाई मोहन के द्वारा कृष्ण जन्माष्टमी का व्रज रखने पर एक कहानी लिखी– 'व्रत और व्रती' चूंकी यह कहानी उनके कथा संग्रह "अनुभूति के घेरे" (१९९७) में प्रकाशित है। यह कहानी संग्रह आपसी प्रेम से ओतप्रेत है और ये भी एहसास करती है प्रेम पाने का नहीं त्याग की भावना का नाम है।

सुशीला जी का कहानी संग्रह 'टूटता वहम' में 'मंदिर का लाभ' कहानी अंधविश्वास को दर्शाती है। 'सिलिया', 'मेरा समाज', 'मुझे जवाव देना है', 'झरोखे', 'मेरा बचपन' इत्यादि कहानियों का स्वर जातिवादी और स्त्रीवादी विचार विमर्श का है। इनकी तीसरी कहानी संग्रह 'संघर्ष' से भरी हुई है। इनकी कहानियों में बदले की भावना भी है। "संघर्ष" कहानी में 'शंकर' और 'बदला' कहानी कल्लू सवर्णों का वदला मार–पिटाई से लेते हैं।

सुशीला टाकभौरे का दूसरा काव्य संग्रह पर अपना मंतव्य प्रकट किया "यह तुम भी जानो" (१९९४) यह काव्य दलित और नारीवादी है। इस काव्य संग्रह पर डॉ० सरजूप्रसाद मिश्र ने लिखा है कि दृ श्रीमति सुशीला टाकभौरे के इस काव्य संग्रह में प्रणय, शृंगार और प्रकृति अनुपस्थित है। अक्तूबर १९९३ में नागपूर में आयोजित "हिन्दी दलित लेखक साहित्य सम्मेलन" के बाद उनके सोच में काफी परिवर्तन आयी।

सुशीला जी का नया काव्य संग्रह "हमारे हिस्से का सूरज" (२००५) है। उनमें जो कविताएं है, वे दलितों के अतीत और वर्तमान की गहरी समझ की अभिव्यतियाँ मिली हैं। "हाशिए का विमर्श", परिवर्तन जरूरी है" निबंध संग्रहों में सुशीला जी वाल्मीकी जाति की जीवन शैली दिखाई है। अफसोस की बात है कि युवा पीढ़ी अपनी ताकत से बेखबर है वह चुपचाप पुरानी पीढ़ी के संरक्षण में, उनके दिखाये मार्ग पर अंधे के समान चली जा रही है। इसी तरह सदियाँ बीत गईं ।

सुशीला जी के 'नीला आकाश', 'वह लड़की', 'तुम्हें बदलना होगा' उपन्यास भी समाज जो एक नई दिशा देते नजर आती हैं।

सुशीला जी की आत्मकथा "शिंकजे का दर्द" (२०११) में प्रकाशित हुई। इस आत्मकथा में इनके जीवन के कड़े अनुभव का विवरण हैं। इस उपन्यास में संताप है दलित होने के साथ ही स्त्री होने का। इसमें शोषित, पीड़ित, अपमानित, अभावग्रस्त दलित एवं स्त्री

जीवन कि व्यथा है। विशेष रूप से सुशीला टाकभौरे का जीवन लेखन दलित समाज और स्त्री को केंद्र बिन्दु में रख कर किए गए विचार विमर्श और बातचीत का निष्कर्ष है।

निष्कर्ष :

सुशीला जी की सभी रचनाएँ चाहे वह दलित विमर्श से संबन्धित हो या नारी विमर्श से। उच्च आदर्शों एवं समतामूलक समाज के गठन से संबन्धित है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री मुक्ति, नारी स्वतन्त्रता तथा उनके अधिकारों को लेकर चाहे कितना भी बड़े दावे किए जाएँ सब व्यर्थ हैं। जब तक नारी स्वयं इस बात को नहीं समझती तब तक उसकी प्रगति हो ही नहीं सकती। नारी को समाज में सुरक्षा कैसे मिले इससे बेहतर यह है कि वह सुरक्षित कैसे बनें।

अतः निष्कर्षतः अंत में कहा जाता है कि माहिला दलित लेखकों में सुशीला टाकभौरे जी निश्चित ही एक बड़े स्थान कि अधिकारी है और भविष्य में भी वे अपनी कलम से महिला एवं दलित समाज का मार्ग प्रशस्त करती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. डॉ० अनु पाण्डेय (अप्रैल, १८, २०२१) – सुशीला टाकभौरे का संक्षिप्त जीवन परिचय।
२. डॉ० रेखा सेती, इंद्रप्रस्थ महिला महा विद्यालय, दिल्ली– सुशीला टाकभौरे की कविताओं, में, दलित और स्त्री पक्ष।
३. शिकंजे का दर्द दृ दलित एवं नारी मुक्ति का यादर्ध दस्तावेज दृ प्रथम संस्मरण, शिल्पायन, नई दिल्ली (२०११)।